**प्रश्न 12. पुरूष–परीक्षामे संकलित दानवीर कथाक वर्णन करू।**

उत्तर :– उज्जयिनी नामक नगरमे राजा विक्रमादित्यक राजधानी छलन्हि। एक दिन अपन राज सिंहासन पर बैसल रहथि तखन कोनो वैतालिक द्वारा एक श्लोक सुनलनि जकर आशय छल, यथा–

दानवीर राजा बलाहक जय जयकार। ओ राजा कतेक महान छथि, जनिक गुणगान संतुष्ट मनसँ ब्राह्मण लोकनि, पूर्ण मनोरथ प्रसन्नचित्त बन्दीलोकनि, इच्छापूर्तिसँ कृतार्थ नोकरसभ, अधीनस्थ देश देशक राजागण, बन्दी भेल पण्डित समुदाय ओ स्वर्ण पुरस्कार प्राप्त योद्धा लोकनि दिशा दिशामे नित्य नियमित रूपे करैत रहैत छथि।

एतवा सुनि राजा विक्रमादित्य उक्त श्लोकके पढ़निहार वैतालिकके कहलनि हाँ वैतालिक। तोहर ई राजा बलाह के थिकाह? हमरा आगाँ एना गर्वपूर्वक हुनक उत्कर्षक वर्णन कियैक कए रहल छह? वैतालिक बाजल हम थिकहुँ वैतालिक, हमर तँ ई वृत्तिए थिक जे वीरलोकनिक यश दिशा–दिशामे विस्तार करैत रही। कारण,

वैतालिक तँ संग्राममे शूरगणके ललकारा दए बढ़बैछ, मदांधके बोध दैछ, कायरके दुर्गुण हटबैछ ओ राजालोकनिक आगाँ विपक्षिओक गुणक चर्चा करैछ, वैतालिक प्राण बरू दय देत किन्तु हृदयक संकोच कृपणता नहि राखत।

ते तँ शूर लोकनि हमरासँ पारितोष दै छथि, आ हम हुनका सभक यशक अंकुरित पौधके दिगदिगन्त धरि पल्लवित करैत रहै छी। श्रीमानके यदि से सुनलासँ अमर्ष हो तँ ओहिसँ बेसी वा ओहनो पौरूष देखाओल जाय। एहि हेतु कोप कथिक? राजा पुछलनि केहन की छनि हुनक पौरूष? वैतालिक बाजल देव। ओहि बलाह नामक राजाक द्वारि पर सभ राति सोक एक मन्दिर तैयार होइछ, प्रतिदिन राजा ओकरा काटि–काटि ओकर सोन ब्राह्मण, गुणी ओ दरिद्र लोक सभके बाँटल करैत छथि। हुनक एहि दानसँ संतुष्ट भ भ क ओ सभ केओ हुनक यशोगान करैत रहै छथि। राजा विक्रमादित्य बजलाह, वैतालिक तो ई सत्य कहैत छह? वैतालिक कहल असत्य के कहत? यदि अपनेके विश्वास नहि हो तँ अपन गुप्तचर द्वारा एकर जाँच करबाय लिअ। राजा बजलाह जा धरि एकर जांच नहि भ जाइछ तो एहि नगरमे रहह। यदि तोहर कहब सत्य होयतहु तँ तोरा रत्नक पुरस्कारसँ सम्मानित करबहु। ई कहि राजा वैतालिकके बाहर पठाओल।

Scanned by CamScanner

राजा विक्रमादित्य अन्तःपुर जाय एकान्तमे विचार करए लगलाह। बलाहक चरित्र तँ अत्यन्त आश्चर्यजनक अछि। अथवा विधाताक सृष्टि प्रपंच मे असंभव की अछि? ते जाकय ई कुहूहल देखी ई विचारि राज्यक भार मन्त्रीलोकनिकके सौपि अपने अग्नि ओ कोकिल नामक दुइ वेतालके बजाय, ओकर कान्ह पर सवार भय बलाहक राजधानी गेलाह। ओतय जवान सैनिक वेष बनाय राजा बलाहक भेट कए कहलनि महाराज संग्राममे जकर समान केओ दोसर योद्धा नहि एहन सासी विक्रमादित्य। जाक हम द्वारपाल थिकहुँ अपने नाम यश सुनि अपनेक ओतय सेवाक हेतु हम आयल छी। एतवा निवेदन कए ओ राजाके प्रणाम कएल। राजा कहलनि हे द्वारपाल तो त बड़ पैघ महाराजक द्वारपाल थिकह, हमरहुँ ओतय द्वारहि पर अधिकारी भ क रहह। ओहि दिनसँ विक्रमादित्य द्वार पर स्थित भय गेलाह। ओ अत्यन्त आश्चर्यजनक घटना देखथि जे प्रतिदिन स्वर्ण मन्दिर बनैत अछि, ओ अनिर समस्त सोन लोकमे बाँटल जाइछ। ओ सोचय लगलाह हिनका स्वर्ण मन्दिर कोना भेटैछ, हमरा से कियैक ने भेटैछ? जे काज कोनो पुरूष क सकैछ, तकरा लेल ककरो उदासीन नहि होएबाक थिक। कारणक जाँच करब उचित अछि। तखन ओ ओकर कारणक जिज्ञासा करय लगलाह।

एक रातिक निशाभागमे जखन नगरक सभलोक ओ राजपरिवारक सभ व्यक्ति सूति रहल छलाह तखन विक्रमादित्य देखलनि जे राजा बलाह अपन महलसँ बहरलाह ओ नगरसँ बाहर बिदा भेलाह। ई देखि ओ चुप्पहि, जाहिसँ लक्ष्य नहि कए सकथि ताहि रूपे, हुनका पाछाँ–पाछाँ चललाह। बलाह नदी तीरमे स्थित परम भयानक श्मशान पहुँचलाह, जे श्मशान नाचैत बेताल सभक पदाघातसँ, आतंक, डाकनीक डमरू निनादसँ हजारो गिदड़नीक भूकबसँ ओ उद्वेगी राक्षस सभक क्रूर क्रीड़ासँ अति विकट छल। ओतय नदीमे नहयला पर राजाके भैरवक दूत सभ मनुष्यक ताँतिसँ बान्हि धह धह जरैत आगिसँ तप्त तेल भरल कड़ाहमे फेंकि देलक, ओ राजा अत्यनत कष्टपूर्वक प्राणत्याग कयल। तखन हुनक निष्प्राण शरीर तेलमे सुसिद्ध भ गेल, तखन भगवती चामुण्डा प्रत्यक्ष भ ओहि मांसके खयलनि। मांस खयलाक बाद भगवती चामुण्डा परम संतुष्ट भ राजाक हड्डीके अमृतसँ सिक्त कए पुनः हुनका ओहिना बना देल। पुनः जीवित राजा बलाह भगवतीके प्रणाम क वर माग्डल। बलाह बजलाह हे भगवती दान यशसँ प्रसिद्ध पुरूष यदि याचक लोकनिक मनोरथ पूर्ण करबामे समर्थ नहि होथि तँ मृत्युओसँ पूर्ण करबाक कामनासँ भगवतीके अपन मांस सँ पूजन कएल। अतः हे जननी हमर काना पूर कएल जाय। देवी बजलीह बलाह भोरे अहाँक

Scanned by CamScanner

द्वारि पर पहिले जकाँ सोनक मन्दिर प्रस्तुत होअओ। तखन देवीक वरदान पाबि कृतार्थ भय बलाह अपना घर फिरि अएलाह।

राजा विक्रमादित्य से सभ देखि सोचलनि वैतालिक सत्ये कहलक। बलाह वस्तुतः दानवीर थिकाह जे दानक हेतुएँ प्रतिदिन अपन प्राण द धन अर्जन करैत छथि। भगवती तँ दयामयी थिकीह। तखन कियैक ने एक बेर प्राण अर्पण क हिनका कृतार्थ करैत छथि? अस्तु होअ दिऔक अगिला राति, जे उचित थिक से करब। ई बिचारि ओ राजद्वार पर जा क अपन काज देखए लगलाह।

ओकर दोसर राति मंत्री ओ सामन्त ओ भृत्य लोकनिसँ घेरल बेढ़ल बलाह जा एकान्त होएबाक प्रतीक्षामे छलाह, ता साँझे राति जाबत नगरक लोक सभ सूतल नहि छल ताबतहि बिनु दोसराके संग लेने एकसरे विक्रमादित्य ओहि स्थानमे पहुँचलाह स्नान कए खौलैत तेल भरल कड़ाहमे कूदि गेलाह। भीजल शरीरक माँससँ तेल कड़कडा उठल से सूनि भगवती ओतय आबि मांस खयलनि, हुनक हड्डीके अमृतसँ सीचलनि। जखन ओ जीवि उठलाह तखन हुनका बलाह बूझि भगवती वर देबाक इच्छा करितहि छथि तावत ओ फेर कड़ाहमे कूदि पड़लाह। फेर भगवती हुनक मांस खयलनि। एहि प्रकारे बारंबार ओ जिआओल गेलाह आ पुनः कड़ाहमे झंप लैत गेलाह। एहन सात्त्विक स्वभावबला धीर पुरूष ई विक्रमादित्ये थिकाह से बूझि भगवती बजलीह हे विक्रमादित्य। अहाँ पर तँ हम प्रसन्ने छी। अहाँके आठो सिद्धि प्राप्ते अछि, तखन कोन निमित्ते पुनः एते साहस कयल अछि? हम तँ ने हुनक माँस सँ आ ने अहाँक मांससँ तृप्त होइ छी, हम तँ केवल पुरूषक साहसक जांच करबालय कृत्रिम भूख ओ तृप्ति देखबै छी। एखन हम अहाँक साहससँ संतुष्ट भेलि छी। वर मांगू।

विक्रमादित्य प्रणाम क वर माडलनि। देवि अहाँ जगन्माता छी, भक्तक प्रति वात्सल्य भाव रखनिहार छी। बलाहक प्रति दया भेल ते अपनेक आराधना कएलहुँ अछि जे बलाहके मृत्युवरणक साहस बिनु कएनहुँ हुनक द्वारि पर सोनक मन्दिर प्रस्तुत होइत रहौन। भगवती बजलीह तहिना होअहो। एहि प्रकारे वरदान प्राप्त क राजा विक्रमादित्य अपन राज्य फिरलाह। जे वैतालिक सतयवार्ता कहने रहनि तकरा बजाक रत्न वस्त्र ओ घोड़ा–हाथी प्रदान कए पुरस्कृत कएलनि।

Scanned by CamScanner